स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

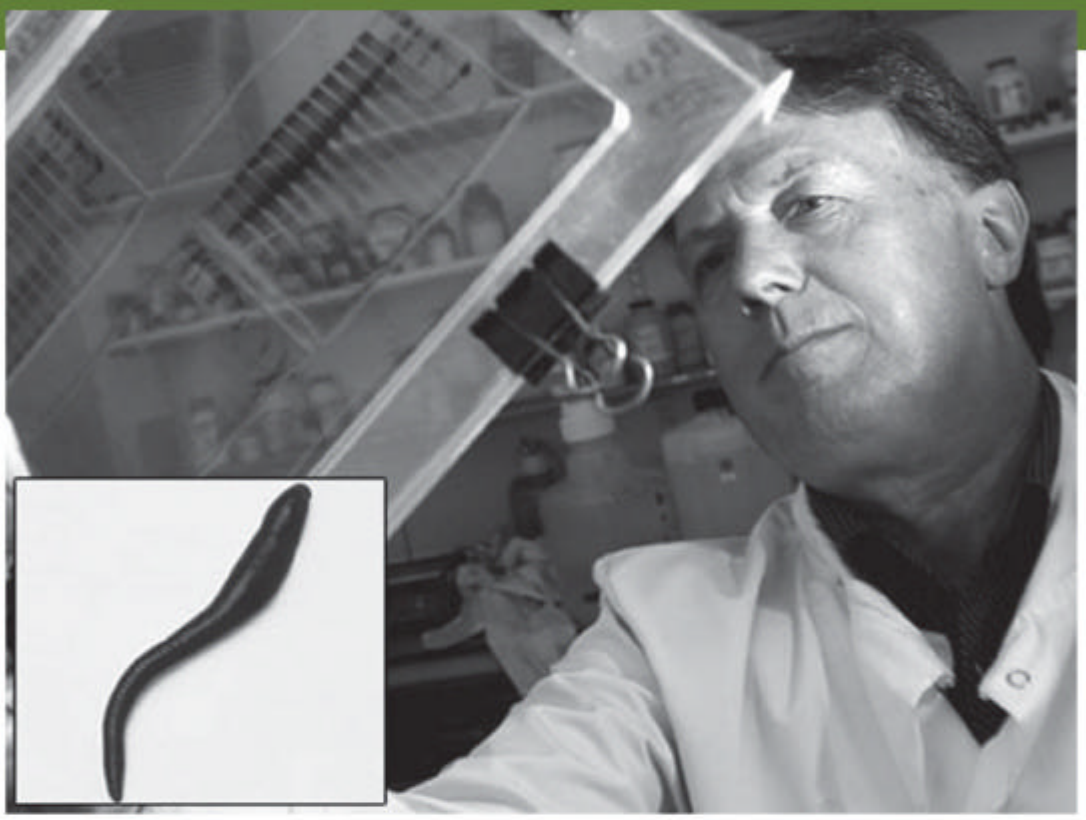

डेविड रिचर्ड की खुजली वाली त्वचा

ऐसे बहुत से शोधकर्त्ता रहे हैं जो प्रयोगों की खातिर खुद को परजीवियों से संक्रमित करते रहे हैं। ऐसे ही एक जीव वैज्ञानिक हैं डेविड प्रिचार्ड। प्रिचार्ड ने वर्ष 2004 में 50 हुकवर्म के लार्वा को अपनी त्वचा के ज़रिए शरीर में प्रवेश कराया था।

प्रिचार्ड एक प्रतिरक्षा वैज्ञानिक हैं और यह समझने में उनकी रुचि रही है कि शरीर में पल रहे कृमि हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को कैसे प्रभावित करते हैं। जंतु प्रयोगों में वे देख चुके थे कि हुकवर्म शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को इस तरह नियंत्रित करता है कि वह कम प्रतिक्रिया दे। एलर्जी सम्बंधी रोग हमारे शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र की अति-प्रतिक्रिया की वजह से ही होते हैं। प्रिचार्ड व कई अन्य वैज्ञानिक मानते थे कि कृमि संक्रमित लोगों में एलर्जियां कम होंगी।

पपुआ न्यू गिनी व अन्य स्थानों पर किए गए अध्ययनों के दौरान प्रिचार्ड की टीम ने सचमुच देखा कि वहां हुकवर्म से संक्रमित लोगों में पित्ती ज्वर तथा दमा के मामले कम होते हैं। वैसे हुकवर्म संक्रमण बहुत अधिक हो, तो व्यक्ति एनीमिया का शिकार हो जाता है। नैतिकता सम्बंधी सवालों से बचने के लिए उन्होंने स्वयं पर ही कृमि को आज़माने का निर्णय लिया। नतीजे सकारात्मक रहे।

अपने अध्ययनों और इन प्रयोगों के परिणामों को देखते हुए प्रिचार्ड का मत था कि हुकवर्म का परीक्षण मनुष्यों पर किया जाना चाहिए। उन्होंने उपयुक्त अनुमति लेकर करीब 30 लोगों पर इसके परीक्षण किए। परीक्षणों से पता चला है कि कृमि का हल्का-फुल्का संक्रमण भी व्यक्ति को एलर्जी से मुक्ति दिला सकता है। कारण यह है कि कृमि संक्रमण होते ही शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र उन पर हमला करता है और कृमि इससे बचने के लिए प्रतिरक्षा तंत्र को दबाने की कोशिश करता है।

अब प्रिचार्ड कोशिश कर रहे हैं कि कृमि चिकित्सा को एक उपचार के रूप में मंज़ूरी मिल पाए।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी